दीने जाफ़री (जाफ़री मत)

मौलाना सै0 मोहम्मद शाकिर नक़वी साहब क़िब्ला, अमरोहवी

आमतौर पर हमारे समय में ''इस्ना अशरी धर्म'' को ''जाफ़री मत'' कहकर भी याद किया जाने लगा है और कारण इसका यह बताया जाता है कि जिस वक़्त शासन का संकट जवानी पर था और राजनेता राजनीति में फंसे थे; हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़अ० ने इस्लामी शरीअ़त के जो विचार और नियम पेश किए वह सब ''दीन–ए–जाफ़री'' कहलाए। इस निस्बत में ढंग कुछ ऐसा अख़्तियार किया जाता है जैसे इमामअ० ने कोई नया मज़हब ईजाद किया हो। इसी आधार पर कुछ अनभिज्ञ और ना समझ सज्जन कहने लगते हैं कि ''शीआ़ मत'' बाद की पैदावार है। इस भ्रामक प्रचार में कुछ सोंच समझकर और जानबूझ कर के क़स्दन हिस्सा लेने वालों ने हिस्सा लिया और कुछ जानकारी में ऐसा करते रहे और कुछ अनायास मूर्खता में हाँ में हाँ मिलाते हुए आले मोहम्मदस० की फ़िक़्ह (धर्मविधि) को ''जाफ़री धर्मविधि'' कहने लगे। क़यामत ये हुई कि बाज़ शीआ़ लेखकों ने भी ठोकर खाई। उन्होंने पुराने ग्रन्थों में फ़िक्हे जाफ़री का ज़िक्र देखा परन्तु वह उसकी अस्ल तक न पहुंच सके। वह फ़िक्हे जाफ़री और फ़िक्हे आले मुहम्मद दोनों परिभाषाओं को एक ही समझ बैठे हालांकि फ़िक्हे आले मुहम्मद ''फ़िक़्ह–ए–इस्ना अशरी और फ़िक़्हे जाफ़री एक अधूरी (अपूर्ण), नाक़िस और नामुकम्मल निस्बत है। फ़िक़्हे आले मोहम्मदस० वह है जो किताब–ए–अलीअ० और मुसहफ़े फ़ातिमास० की शक्ल में हज़रत पैग़म्बरस० ही के युग शुभ में संकलित हो चुका था और ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर में इसी की बुनियाद पर फ़ैसले किये जाते थे और जटिल समस्याओं में ख़लीफ़ा अहलेबैतअ० से सहायता लेते थे। लेकिन इस्लामी इतिहास की करवटों के साथ कि फ़िक़्हे अहलेबैतअ० के विकल्प सामने आते गये और बनी अब्बास का काल आते आते हनफ़ी, शाफ़ई मालिकी और हंबली फ़िक़्ह प्रचलित हो गयी।

लगभग इसी ज़माने में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़अ० की नस्ल की एक शाख़ ''इस्माईलियों'' के नाम से उभरी और ''फ़ातिमी हुकूमत'' के नाम से अपने को परिचित कराने लगी। ज़ाहिर है कि यह लोग अपने राज्य के दायरे में प्रचलित फ़िक़्ह् को '' फ़िक़्हे फ़ातिमी'' कहना चाहते थे लेकिन इस्ना अशरी समुदाय ने अपनी व्यवहार कुशलता से ऐसा होने नहीं दिया बल्कि उनकी फ़िक़्ह को ''फ़िक़्हे जाफ़री'' और उनके मत को जाफ़री मत कहने लगे। कारण यह था कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़अ० के बाद लोग फ़िक़्हे अहलेबैतअ० से बिल्कुल अलग हो गये थे और ''छह इमामी'' या ''जाफ़री'' कहलाने लगे थे। ख़ोजा और बोहरा भाइयों में आज भी यह मत पाया जाता है और इमाम जाफ़रे सादिक़अ० के बाद इनका मत और शरीअ़त दोनों इस्ना अशरी मत और शरीअ़त से अलग है। इसलिए इन लोगों का मत जाफ़री हैं और इमामिया मत इस्ना अशरी मत है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़अ० को इस्ना अशरी मत का संस्थापक समझना वैसा ही है जैसे हुज़ूरस० का इस्लाम को बानी कह दिया जाता है हालांकि कुर्आन में स्पष्ट रूप से बताया है यह शरीअ़त तो तुम्हारे बाप ''इब्राहीम'' की शरीअ़त है और इसी से तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। फिर भी मुसलमानों की ज़बान पर हुज़ूर के लिए बानी–ए–इस्लाम का नाम अवश्य आता है बस इसी तरह कुछ परिस्थितियों की पेचीदगी, कुछ लोगों की ग़लत–फ़हमी कुछ राजनीति के दबाव से फ़िक़्हे आल–ए–मोहम्मदस0 को फ़िक़्हे जाफ़री कहा जाने लगा। यह फ़िक़्ह बारह इमामों में से किसी भी नाम से मनसूब हो सकती है लेकिन यह इन सब हज़रात की मुश्तरका तालीम है जो कुर्आन और हज़रत पैग़म्बर की शिक्षा पर आधारित है। इसलिए इसे केवल ''फ़िक़्हे जाफ़री'' कहना सामान्य मानस को ग़लत ढ़रें पर लगाना है। यह अलग बात है कि इसे इतना मशहूर किया गया कि हम खुद इस ग़लतफ़हमी का शिकार हो गये।

● ● ●